□□□□□□ □□□□□

लखनऊ□ उत्तर प्रदेश में कांग्रेस के कई दग्गिज मैदान छो□ सक्ते हैं□ कांग्रेस के कद्दावर नेता डाक्टर संजय सहि तो मैदान ही नहीं पार्टी छो□ने की क्वायद में जुटे हैं□ सांसद अजहरुद्दीन उन सांसदों में पहले नंबर पर हैं जो अपने नरि्वाचन क्षेत्र मुरादाबाद से दोबारा चुनाव नहीं ल□ना चाहते हैं□ अगर ल□ तो हार तय है□ इसी तरह बहराइच के सांसद कमल कशिोर कमांडो अब बांसगांव से ल□ना चाहते हैं□ फरीोजाबाद से सांसद राज बब्बर भी अपनी सीट बदलना चाहते हैं□ पार्टी भी उन्हें लखनऊ से चुनाव ल□ा दे तो हैरानी नहीं होनी चाहि□□ गोण्डा से बेनी बाबू के लि□ भी इस बार रास्ता आसान नहीं है□ वे अब अपने क्षेत्र की लगातार सुध ले रहे हैं□

यह बानगी है उस पार्टी की जो मोदी को चुनौती दे रही है और मुसलमि वोटों की सबसे ब□ी दावेदार है□ लेकनि मुरादाबाद से लेकर बहराइच जैसे मुसलमि बहुल इलाके में ही इनकी हालत ज्यादा पतली है□ कांग्रेसी आगामी वधिानसभा चुनाव का गणति बताते हु□ पछिले लोकसभा चुनाव का तो जक्रि करते है पर पछिले साल के वधिानसभा चुनाव के नतीजों का हवाला नहीं देते□ वे इसे राष्ट्रीय चुनाव बता देते है जबकि वधिानसभा चुनाव में इनके सभी राष्ट्रीय नेता ही प्रचार में जुटे थे□

सोनयि गांधी, राहुल गांधी, प्रयिंका गांधी, सलमान खुर्शीद, राज बब्बर, दग्विजय सहि से लेकर सनि क्लाकार तक इसमें शामलि थे□ बावजूद इसके सोनयि और राहुल के ग□ में ही कांग्रेस को ब□ा झटका लगा था□ अब हालात तो बदले है पर राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस की जो स्थति है वह उत्तर प्रदेश में नहीं है□ दरअसल उत्तर प्रदेश में कांग्रेस के पास जनाधार वाला □क भी नेता नहीं है जसिकी अपील समूचे प्रदेश में हो□ सीबी गुप्ता, कमलापति त्रपिाठी, हेमवती नंदन बहुगुणा, नारायण दत्त तवािरी, वीर बहादुर सहि से लेकर वीपी सहि जैसे कद का आज कोई भी नेता प्रदेश में नहीं है□ यही कांग्रेस की असली समस्या भी है□ कांग्रेस ने भी न□ नेताओं को वह ताकत नहीं दी जो अपेक्षति थी□ इस कारण मजबूत नेतृत्व नहीं उभरा□ मंडल और मंदरि के साथ दलति आंदोलन के उदय के बाद कांग्रेस का जनाधार भी खत्म हो गया□ अब कांग्रेस राहुल गांधी के नेतृत्व में अपने पुराने □ंडे पर लौट रही है□ राहुल गांधी की छवि अन्य नेताओं के मुकाबले सबसे अलग है□ उन्होंने कांग्रेस को मजबूत करने की क□ी क्वायद की है□ लेकनि जातीय गोलबंदी को वे तो□ नहीं पा□□ इसी वजह से कांग्रेस किसी लहर में ज्यादा सीट पा भी जा□ तो उसे संभाले रख पाना मुश्कलि होता है□

पछिले लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी के मुखयि मुलायम सहि ने हदिुत्व के प्रतीक कल्याण सहि से हाथ मलिाया जसिका ब□ा फायदा कांग्रेस को मलिा था□ लेकनि यह मुसलमानों की नाराजगी का वोट था जो फरि समीकरण बदलते ही समाजवादी पार्टी के पास वधिानसभा चुनाव में लौट गया□ अब कांग्रेस उस वोट को हासलि करने के लि□ ही सारी जद्दोजहद कर रही है□

वधिानसभा चुनाव में कांग्रेस ने बीस मुसलमि उम्मीदवार चुनाव में उतारे थे लेकनि जीता सरि्फ □क□ इससे मुसलमि बरिादरी में कांग्रेस की पैठ का अंदाजा लगाया जा सक्ता है□ अब पार्टी मोदी और मुजफ्फरनगर के नाम पर मुसलमि वोटों की अपेक्षा कर रही है□ लेकनि मुसलमि वोट पछिले लोकसभा चुनाव की तरह प□ेंगे यह तय नहीं है□ यही वजह है कि दग्गिज कांग्रेसी मैदान छो□ रहे हैं□ इनमें डाक्टर संजय सहि पुराने बागी है जनि्हें केंद्र में मंत्री नहीं बनाया गया था तबसे वे अलग-थलग महसूस कर रहे हैं□ सूत्रों के मुताबकि, वे समाजवादी पार्टी में भी जाना चाहते थे और भाजपा में भी□ भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सहि राष्ट्रीय स्तर पर न□ राजपूत नेता के रूप में उभर रहे है इसलि□ वे राजपूत क्षत्रपों को साथ लेना चाहते हैं□ राजा भैया से लेकर

उत्तर प्रदेश में मैदान छोड़ सकते हैं कांग्रेस के कई दिग्गज
Monday, 18 November 2013 09:17

संजय सिंह तक इसमें शामिल थे। सपा ने राजा भैया को मंत्री बनाकर उन्हें जोड़ रखा। लेकिन कांग्रेस का रुख ऐसा नहीं है। इसलिए संजय सिंह बगावत पर आमादा हैं। इसके पीछे वोटों का वह गणित भी है जिसमें हार हो सकती है। विधानसभा चुनाव में रानी हार भी चुकी है।

2 / 2